सामाजिक परिवर्तन का उत्क्रान्तिवादी सिद्धान्त (Evolutionary Theory of Social Change)

1. प्रस्तावना

उत्क्रान्तिवादी दृष्टिकोण (Evolutionary Perspective) के अनुसार समाज भी जीवों की तरह धीरे-धीरे *सरल से जटिल* रूप की ओर बढ़ता है। यह सिद्धान्त 19वीं सदी में पश्चिमी समाजशास्त्रियों द्वारा प्रस्तुत किया गया, जब डार्विन के **"Theory of Evolution"** ने सामाजिक चिंतन को प्रभावित किया।

---

2. मूल धारणाएँ (Basic Assumptions)

1. समाज का विकास *क्रमिक (Gradual) और सतत* होता है।
2. सामाजिक परिवर्तन हमेशा *सरल से जटिल संरचना* की ओर होता है।
3. यह प्रक्रिया *एक दिशा (Unilinear)* में चलती है – अर्थात् पीछे लौटना संभव नहीं।
4. समाज में नई संस्थाएँ और मूल्य उभरते हैं, जो पहले की अपेक्षा अधिक उन्नत होते हैं।
5. यह सिद्धान्त परिवर्तन को *प्रगति (Progress)* से जोड़कर देखता है।

---

3. प्रमुख विद्वान और उनके विचार

- **ऑगस्ट कॉम्टे (Auguste Comte)**
    - *तीन अवस्थाओं का नियम (Law of Three Stages)* :
        1. धर्मवादी अवस्था (Theological Stage)
        2. दार्शनिक अवस्था (Metaphysical Stage)
        3. वैज्ञानिक अवस्था (Positive/Scientific Stage)
    - समाज धार्मिक सोच से वैज्ञानिक सोच की ओर प्रगति करता है।
- **हर्बर्ट स्पेंसर (Herbert Spencer)**
    - समाज को जैविक जीव (Social Organism) के समान माना।
    - *सैन्य समाज* से *औद्योगिक समाज* की ओर विकास।

- सामाजिक विभाजन (Differentiation) और संगठन (Integration) पर बल।

- **एमिल दुर्खीम (Émile Durkheim)**
  - परिवर्तन *यांत्रिक एकता* (Mechanical Solidarity) से *सजीव एकता* (Organic Solidarity) की ओर।
  - कार्य-विभाजन (Division of Labour) को विकास का सूचक माना।
- **लुइस हेनरी मॉर्गन (Lewis H. Morgan)**
  - समाज की प्रगति की अवस्थाएँ:
    1. आदिम अवस्था (Savagery)
    2. बर्बर अवस्था (Barbarism)
    3. सभ्यता (Civilisation)
- **जेराल्ड लेन्स्की (Gerhard Lenski)**
  - *सामाजिक-सांस्कृतिक उत्क्रान्ति (Socio-Cultural Evolution)* – समाज का विकास तकनीक और सूचना पर निर्भर।

---

4. विशेषताएँ (Features)

1. **क्रमिक और धीमी प्रक्रिया** – परिवर्तन अचानक नहीं, बल्कि क्रमशः होता है।
2. **रेखीय प्रगति** – समाज हमेशा उन्नति की ओर बढ़ता है।
3. **सांस्कृतिक और संरचनात्मक जटिलता** – समय के साथ संस्थाएँ, मान्यताएँ और मूल्य जटिल होते जाते हैं।
4. **सर्वमान्य नियम** – इसे सभी समाजों पर लागू करने का प्रयास किया गया।
5. **प्रगति-केन्द्रित** – परिवर्तन को "बेहतर और उन्नत" मानकर व्याख्या।

---

5. आलोचनाएँ (Criticism)

1. **यूरोकेन्द्रिक (Eurocentric)** – यह सिद्धान्त पश्चिमी समाजों के अनुभव पर आधारित है और सब पर लागू मानता है।
2. **एकरेखीय दृष्टिकोण** – यह मानता है कि सभी समाज एक ही दिशा में आगे बढ़ते हैं, जबकि वास्तविकता में परिवर्तन विविध रूपों में होता है।
3. **प्रगति = परिवर्तन** – यह मानता है कि हर परिवर्तन प्रगति है, जो हमेशा सही नहीं।
4. **ऐतिहासिक अपवाद** – कई समाज पीछे भी गए हैं (Decline), जैसे रोमन सभ्यता।

---

6. निष्कर्ष

उत्क्रान्तिवादी सिद्धान्त ने समाजशास्त्र को यह समझने में मदद की कि समाज स्थिर नहीं है, बल्कि निरंतर गतिशील है। इसने सामाजिक परिवर्तन को वैज्ञानिक ढंग से समझाने की नींव रखी। हालांकि आधुनिक समाजशास्त्र अब परिवर्तन को *बहुआयामी* और *विविध मार्गों* वाला मानता है, फिर भी यह सिद्धान्त समाजशास्त्रीय अध्ययन का एक महत्वपूर्ण प्रारम्भिक चरण है।